Skandakrita Shiva Stuti

स्कन्दकृता शिवस्तुतिः

Document Information

Text title : Skandakrita Shiva Stuti

File name : skandakRRitAshivastutiH4.itx

Category : shiva, stuti, shivarahasya

Location : doc_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyaH saptamAMshaH | adhyAyaH 1 | 204-234||

Latest update : March 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

March 8, 2024

sanskritdocuments.org

स्कन्दकृता शिवस्तुतिः

देवदेव जगन्नाथ देवदेवोत्तम प्रभो ।
वेदवेदान्तवेद्येश जगज्जन्मैककारण ॥ २०४॥

निरामय निराधार निर्द्वन्द्व निरुपाधिक ।
निष्कलङ्क निराकार विकाररहितानघ ॥ २०५॥

महादेवामराधीश वृषाङ्क वृषवाहन ।
वृषभध्वज विघ्नेश त्रिपुरान्तक शङ्कर ॥ २०६॥

कालकाल कृपासिन्धो शितिकण्ठ शिवाप्रिय ।
त्रिकाग्निकाल कालात्मन् कालाधार प्रवर्तक ॥ २०७॥

मनोन्मनामलानन्त व्योमकेश जगत्पते ।
भूतेश भूतसङ्घात्मन् भूतैकनिलयामल ॥ २०८॥

विभूतिभूषण श्रीमन् भस्मोद्धूलितविग्रह ।
कैलासशिखरावास कृत्तिवास महेश्वर ॥ २०९॥

कपालमालाभरण जरामरणवर्जित ।
योगिवृन्दैकमन्दार वृन्दारकगणार्चित ॥ २१०॥

योगिहृत्पङ्कजारूढनिरूढनिजविग्रह ।
गण्डमण्डलविभ्राजन्मणिकुण्डमण्डित ॥ २११॥

अनन्त चण्डमार्ताण्डमण्डलाधिकसुप्रभ ।
हिरण्यबाहो विश्वात्मन् संसारार्णवतारक ॥ २१२॥

विश्वतोमुख सामात्मन् विश्वतश्चरणाजर ।
विश्वतोलोचनानन्त व्योमकेश सदाशिव ॥ २१३॥

ज्येष्ठ श्रेष्ठ समस्तात्मन् व्यापकानन्तविग्रह ।
त्रिशूलपाणे खट्वाङ्गिन् निःसङ्ग निगमाव्यय ॥ २१४॥

निराश्रयाखिलाधार परब्रह्ममयाव्यय ।
ब्रह्मानन्दैकनिलय मयस्कर निरीश्वर ॥ २१५॥

सत्त्वप्रधान सत्त्वात्मन्नानन्दमय सर्वग ।
महाश्मशाननिलय महाप्रेतासनस्थिर ॥ २१६॥

पिनाकपाणेऽदुष्टात्मन् शिष्टलोकैकजीवन ।
शार्दूलचर्मवसन भूधरेशशरासन ॥ २१७॥

स्वेच्छाकृतावनीधाज(चक्र) दग्धत्रिपुरकानन ।
वासीकृतानन्दवन सोमसूर्याग्निलोचन ॥ २१ ८॥

मुनिचित्तासनासीन कालकूटविषादन ।
कन्दर्पदर्पदमन वृषाधीशैकवाहन ॥ २१९॥

दुष्टारिसङ्घशमन दुर्लङ्घ्यदृढशासन ।
अप्रधृष्यातिरोक्ष्या(ह्या)च्छतेजःपुञ्ज निरञ्जन ॥ २२०॥

महोदर महावीर महाशूर सुरेश्वर ।
महाधाराद्भुताकार सर्वलोकप्रभाकर ॥ २२१॥

नमस्ते नमस्ते महादेव शम्भो नमस्ते नमस्ते प्रपन्नैकबन्धो ।
नमस्ते नमस्ते दयासारसिन्धो नमस्ते नमस्ते नमस्ते महेश ॥ २२२॥

नमस्ते नमस्ते महामृत्युहारिन् नमस्ते नमस्ते महादुःखहारिन् ।
नमस्ते नमस्ते महापापहारिन् नमस्ते नमस्ते नमस्ते महेश ॥ २२३॥

नमस्ते नमस्ते सदाचन्द्रमौले नमस्ते नमस्ते सदाशूलपाणे ।
नमस्ते नमस्ते सदोमैकजाने नमस्ते नमस्ते नमस्ते महेश ॥ २२४॥

यस्य स्वरूपं न विदुः सुरासुरा यस्य स्वरूपं न विदुर्मुनीश्वराः ।
यस्य स्वरूपं न विदुर्यमेश्वरास्तस्यैव नित्यं शिवरूपमीडे ॥ २२५॥

यस्य स्वरूपं निगमैरगम्यं तस्यैव नित्यं शिवरूपमीडे ॥ २२६॥

संसारदावानलशामकाय मृत्युञ्जयायामितविक्रमाय ।
सुरासुरौघार्चितपादुकाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २२७॥

घोराऽऽधिपापौघनिवारकाय स्वर्गापवर्गादिफलप्रदाय ।
निरामयायान्धकसूदनाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २२८॥

कुन्देदुशङ्खस्फटिकोपमाय महेश्वरायाश्रितवत्सलाय ।
श्रीनीलकण्ठाय यमान्तकाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २२९॥

भुजङ्गचक्राधिपभूषणाय नानामणिभ्राजितकुण्डलाय ।
कर्पूरगौराय सुरोत्तमाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २३०॥

त्रिकाग्निकालाय मनोन्मनाय त्रियम्बकाय त्रिपुरान्तकाय ।
कालाग्निरुद्राय जगन्मयाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २३१॥

दयासमुद्राय निधीश्वराय धनेशमित्राय सुधामयाय ।
कारुण्यरूपाय मयस्कराय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २३२॥

ब्रह्मेन्द्रविष्ण्वीशसुरार्चिताय देवाधिदेवाय दिगम्बराय ।
अनन्तकल्याणगुणार्णवाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २३३॥

वेदान्तवेद्याय महादयाय कैलासवासाय शिवाधवाय ।
शिवस्वरूपाय सदाशिवाय शिवासमेताय नमः शिवाय ॥ २३४॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते स्कन्दकृता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः १ । २०४-२३४॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyaH saptamAMshaH . adhyAyaH 1 . 204-234..

Proofread by Ruma Dewan

Skandakrita Shiva Stuti

pdf was typeset on March 8, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*